श्री अजितनाथ विधान

क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर

मंगल आशीर्वाद

परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसन्त
श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्दजी मुनिराज

लेखक

आचार्य वसुनन्दी मुनि

सम्पादक

मुनि ज्ञानानन्द जी

कृति -
श्री अजितनाथ विधान

मंगल आशीर्वाद
परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसन्त
श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानन्दजी मुनिराज

लेखक
आचार्य वसुनन्दी मुनि

सम्पादक
मुनि ज्ञानानन्द जी

संस्करण - तृतीय 2020

प्रतियाँ - 1000

मूल्य - सदुपयोग

प्राप्ति स्थान
निर्ग्रन्थ ग्रन्थ माला समिती
ई० 102 केशर गार्डन
सै० 48 नोएडा-201301
मो. 9971548889
9867557668

मुद्रण व्यवस्था
निर्ग्रन्थ ग्रन्थ माला समिती

पुरोवाक्

–आचार्य श्री वसुनन्दी मुनि

जिस प्रकार प्रज्ज्वलित दीपक को निज करतल धारण करके चलने वाला पथिक घनघोर अंधकार में भी अपनी मंजिल तक निरंतर गमनशील रहकर प्राप्त कर ही लेता है, एक रज्जू का सहारा लेने मात्र से बहुत गहरे कूप में पड़ा हुआ व्यक्ति भी बाहर निकल आता है, उसी प्रकार पंच परमेष्ठी की भक्ति रूप प्रज्ज्वलित दीपक जिसके हृदय में विद्यमान है, वह सिद्धालय तक अवश्य ही पहुँच जाता है। भव-कूप में पड़े हुए जीवों के लिए भक्ति ही सुदृढ़ रज्जू के समान है। भव-वारिधि से तिरने के लिए भक्ति ही उत्तम नौका है।

जैसा कि पूजन में पढ़ते हैं–

यह भव-समुद्र अपार तारण के निमित्त सुविधि ठई।
अति दृढ़ परम पावन जथारथ भक्ति वर नौका सही।।

–देव-शास्त्र-गुरु पूजन

आचार्य भगवन् कुन्दकुन्द स्वामी ने अष्ट पाहुड़ में लिखा है–

जिणवर चरणांबुरुहं जे णमंति परम भत्ति रायेण।
ते जम्म बेलि मूलं खणंति वर भाव सत्थेण।।

अर्थ–जो परम भक्ति के अनुराग से युक्त होकर जिनेन्द्र भगवान् के युगल चरण-कमल में प्रणाम/नमस्कार करते हैं, वे भव्य जीव भक्ति रूपी तीव्र अस्त्र के द्वारा जन्म-मरण रूपी वृक्ष-बेल की जड़ को नष्ट कर देते हैं।

प्रस्तुत कृति **क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर** में श्री अजितनाथ भगवान् का पूजन-विधान है। यह भव्य जीवों के विघ्नों, रोगों, विकारों तथा कर्मों से विजय दिलाने में समर्थ हैं तथा प्रशस्त मनोरथ पूरक है।

आचार्य भगवन् समन्तभद्र स्वामी ने बृहद् स्यवंभू स्त्रोत में लिखा भी है–

अद्यापि यस्याजितशासनस्य, सतां प्रणेतृः प्रतिमंगलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं, स्वसिद्धिकामेन जनने लोके॥

अर्थ–आज भी श्री अजितनाथ भगवान का शासन सज्जनों के लिए प्रणाम करने वालों के लिए मंगल करने वाला है। जो भव्य जीव अजितनाथ भगवान् का नामोच्चारण मात्र भी करते हैं, उन महानुभावों के मनोरथ की सिद्धि होती है।

जिनेन्द्र भक्ति–पूजा या अर्चना आत्मा को परमात्मा बनाने का हेतु है। कारण के बिना कार्य की सिद्धि नहीं होती।

प्रस्तुत कृति का सृजन आत्महितार्थ किया है, विषय-कषाय वंचनार्थ ही लेखन हुआ है। इस कार्य से ख्याति, पूजना व लाभादि की कोई भावना नहीं है। इसके सम्पादक संघस्थ मुनि ज्ञानानन्द जी को, पाण्डुलिपि संशोधक बा.ब्र. शुभाशीष भैया (मुनि श्री प्रज्ञानंदजी) को, अपने न्यायोपार्जित द्रव्य का सदुपयोग करने वाले सुधी श्रावकों को व प्रकाशक संस्था के सभी महानुभावों को तथा यत् किंचित् सहयोगी सभी साधकों को यथायोग्य प्रति नमोऽस्तु, समाधिवृद्धिरस्तु एवं धर्मवृद्धि शुभाशीष।

जैनं जयतु शासनम्
सर्वेषां मंगलं भवतु
ॐ ह्रीं नमः

कश्चिदल्पज्ञः श्रमणः
जिनवर चरणाम्बुज चंचरीक

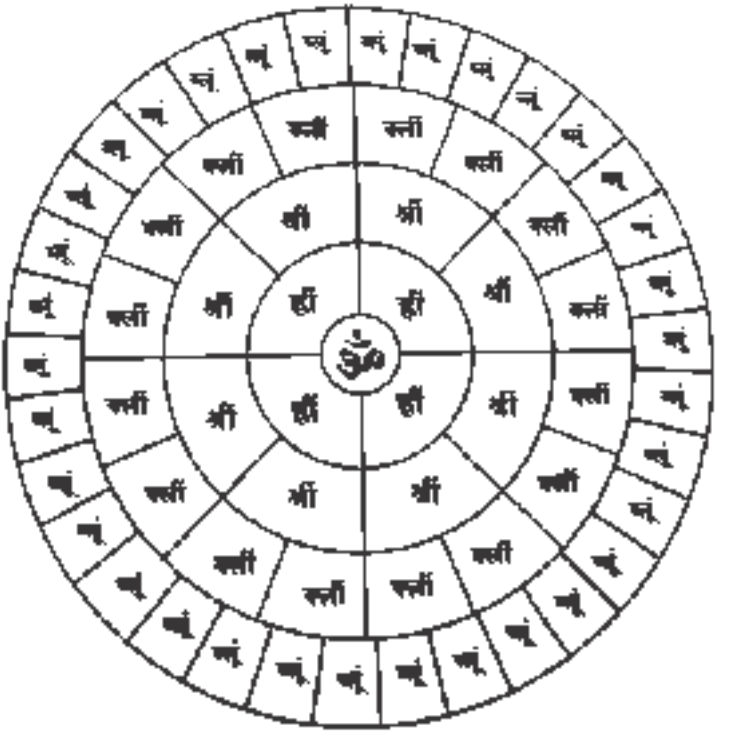
ॐ
ह्रीं
श्रीं
क्लीं
ऐं

मङ्गलाष्टकम्

(शार्दूलविक्रीड़ितम् छन्द)

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्याः जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवराः रत्नत्र्याराधकाः,
पंञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥१॥

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट-प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन-सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥२॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्र्यं पावनं,
मुक्तिश्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥३॥

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रिभुवन, ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रतिविष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥४॥

ये सर्वौषधऋद्धयः सुतपसो वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशलाचायेऽष्टौ-वियच्चारिणः।
पेचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥५॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥६॥

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥७॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते (मे) मंगलम्॥८॥

इत्थं श्रीजिन-मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करम्,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैः धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि॥९॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रम्॥

विधान की प्रारम्भिक क्रियाएँ

अमृतस्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत-वर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(अंजुलि में जल लेकर शरीर पर छिड़कें)

तिलक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम/यजमानस्य सर्वांगशुद्धि- हेतवे नव तिलकं करोम्यहम्॥

1. शिखा 2. मस्तक 3. ग्रीवा 4. हृदय 5. दोनों भुजाएँ 6. पीठ 7. कान 8. नाभि 9. हाथ।

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशः आगत-विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशःआगत विघ्नान् निवारय-निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

ॐ ह्रः णमो लोएसव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशःआगत विघ्नान् निवारय- निवारय सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बंद मुट्ठी से सभी दिशा में पुष्प क्षेपण करें)

परिचारक मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा। (सात बार)

रक्षा-मन्त्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्दि छिन्दि परमंत्रान् भिन्दि भिन्दि वाः वाः क्षः क्षः ह्रूं फट् स्वाहा।

(तीन बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

शान्ति मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्य-तेजो-मूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय, सर्व-रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्वपरकृच्छ्रुद्रोपद्रव-नाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय सर्वारिष्ट शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

(सात बार पढ़कर पात्रों पर पुष्प क्षेपण करें)

भूमि शुद्धि मन्त्र

ॐ शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल-धौतोज्ज्वल स्थूलं, कलशापूर्ण वारिणी॥

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय श्रीशान्तिनाथाय परमपवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्रजलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

पात्र शुद्धि मन्त्र

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा पवित्रतरजलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(पूजा के सभी बर्तन मंत्रित जल के छीटें लगाकर शुद्ध करें)

द्रव्यशुद्धि मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं झ्रौं झ्रौं वं मं हं सं तं पं इ्वीं क्ष्वीं हं सः अ सि आ उ सा समस्ततीर्थपवित्रजलेन शुद्धपात्र-निक्षिप्त-पूजाद्रव्याणि शोधयामि स्वाहा।

(पूजा द्रव्य को मंत्रित जल से शुद्ध करें)

सकलीकरण

(अंगुलियों में पंच परमेष्ठी की स्थापना करना)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतालाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

अंगशुद्धि (दोनों हाथों से अंग स्पर्श करें)

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्ष रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

शरीर पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मां रक्ष रक्ष स्वाहा।

वस्त्र पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

पूजन द्रव्य पर पुष्पक्षेपण करें।

ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

स्थान निरीक्षण करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम पूजा स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वजगत की रक्षा के लिए जल सिंचन करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वजगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधें

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

नियम

सप्त व्यसनों का त्याग, अष्ट मूलगुणों को धारण करना।

जलशुद्धि

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म-तिगिंच्छकेसरि-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्णरूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि जलं सुवर्ण घटं प्रक्षिप्तं-

सर्वगन्धपुष्पाढ्य- ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(पीले सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना)

(मंगल कलश में सुपाड़ी, हल्दी रखने का मन्त्र)

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगलकलशे पुंगादिफलानि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्रीफल रखने का मन्त्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादि ब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने कर्माणि वीरनिर्वाणसंवत्सरे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ..... वासरे.....प्रशस्तलग्ने नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतबीजपूरादिशोभितं.....कार्यस्य निर्विघ्नसम्पन्नार्थं मंगलकलशस्थापनं करोम्यहं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(मंडल के ईशान कोण में कलश स्थापित करें)

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकरमुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

माला शुद्धि

ॐ ह्रीं रत्नैः स्वर्णैः सूतैर्बीजैः रचिता जपमालिका सर्वजपेषु वाञ्छितानि प्रयच्छन्तु।

माला (जाप) को प्रासुक जल से धोकर थाली में स्वस्तिक बनाकर उसमें रखें और उक्त मंत्र को ७ बार पढ़कर पुष्प क्षेपण करें।

।।अभिषेक पाठ।।

श्रीमन्नताऽमर शिरस्तटरत्नदीप्तिः,
तोयाऽवभासि चरणाम्बुजयुग्ममीशम्।
अर्हन्तमुन्नत-पद-प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्तिषूद्यदभिषेक-विधिं करिष्ये॥१॥

अथ पौर्वाह्निक-देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-स्तव-वन्दना-समेतं श्री-पञ्च-महागुरु-भक्तिपूर्वकम् कायोत्सर्गं करोम्यहं।

(यह पढ़कर नौ बार णमोकार मन्त्र पढ़ें)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाः जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूतमुखादयस्ताः।
सद्भावलब्धिसमयादिनिमित्तयोगा,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥२॥

(यह पढ़कर थाली में पुष्पांजलि छोड़कर अभिषेक की प्रतिज्ञा करें।)

(उपजाति)

श्री-पीठ-क्लृप्ते, विशदाक्षतौघैः, श्री-प्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्क-कल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्ता, सत्यापयन्तीं, श्रियमालिखामि॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीलेखनं करोमि।

कनकादिनिभं कम्रं, पावनं पुण्यकारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन-स्नपनाय भक्तितः॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थापनं करोमि।

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार-चामर-सुदर्पण-पीठ-कुम्भ, तालध्वजा-तपनिवारक-भुषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जय पीठपदावलीभिः, सिंहासने जिन! भवन्तमहंश्रयामि॥५॥

वृषभादि-सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ भगवन्! पाण्डुकशिलापीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ।

श्रीतीर्थकृत्-स्नपनवर्यविधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराऽब्धिवारिभिरपूरयदर्थ-कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाऽर्हणीयान्,
संस्थापये कुसुमचन्दनभूषिताग्रान्॥७॥
शातकुम्भीय-कुम्भौघान्, श्रीराब्धेस्तोयपूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥८॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर चार कोनों में कलश स्थापित करें)

आनन्द-निर्भर-सुर प्रमदादि-गानैः,
वादित्र-पूर-जय-शब्द-कल-प्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपतिकीर्तिमेनां,
पीठ-स्थलीं वसु-विधाऽर्चनयोल्लसामि॥९॥

ॐ ह्रीं स्नपन-पीठ-स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म-प्रबन्ध-निगडैरपि हीनताप्तं,
ज्ञात्वापि भक्तिवशतः परमादिदेवम्।
त्वां स्वीयकल्मषगणोन्मथनाय देव !
शुद्धोदकैरभिनयामि नयार्थकस्व॥१०॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनेन्द्रमाभिषेचयामि स्वाहा।

तीर्थोत्तम-भवैनीरैः क्षीर-वारिभि-रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्मान्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥११॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामीति स्वाहा।

(यह पढ़ते हुए कलश से धारा प्रतिमाजी पर छोड़ें)

सकलभुवननाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै-
रभिषवविधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥१२॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति बृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

(यह पढ़कर चारों कोनों में रखे हुए चार कलशों से अभिषेक करें।)

पानीय-चन्दन-सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक-सुधूप-फलव्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन-वीर-मनन्त-शक्तिं,
संपूजयामि सहसा महसां निधानम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे तीर्थपा! निजयशोधवलीकृताशा,
सिद्धौषधाश्च भवदुःखमहागदानाम्।
सद्भव्यहृज्जनितपङ्ककबन्धकल्पाः,
यूयं जिनाः सततशान्तिकरा भवन्तु॥१४॥

(यह पढ़कर शान्ति के लिए पुष्पांजलि छोड़ें)

नत्वा मुहूर्निज-करै-रमृतोपमेयैः,
स्वच्छैर्जिनेन्द्र ! तव चन्द्रकराऽवदातैः।
शुद्धांऽशुकेन विमलेन नितान्तरम्ये,
देहे स्थितान्जलकणान्परिमार्जयामि॥१५॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बपरिमार्जनं करोमि।

(यह पढ़कर शुद्ध और स्वच्छ वस्त्र से प्रतिमाजी को पोंछें)

स्नानं विधाय भवतोऽष्टसहस्रनाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचनो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टिमिन ! तेऽष्टतयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहासनपीठे जिनबिम्बं स्थापयामि।

जलगन्धाऽक्षतैः पुष्पैश्चरुसुदीपसुधूपकैः,
फलैरर्घ्यैर्जिनमर्चे, जन्म-दुःखा-पहानये॥१७॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठस्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निजनेत्रललाटयोश्च, व्याप्तं क्षणेन हरतादधसञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पादयोगाद्, भूयाद् भवाऽतपहरं धृतमादरेण॥१८॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्रीवनिताकरोदकमिदं, पुण्याङ्कुरोत्पादकम्;
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्र-चक्र-पदवी, राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता, संवृद्धि-सम्पादकम्,
कीर्तिश्रीजयसाधकं तव जिन ! स्नानस्य गन्धोदकम्॥१९॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनगन्धोदकं स्वललाटे धारयामि।

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते, सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं, कृति-जनगणाऽदेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा, दशुभवसुकर्माऽटनमभूत्,
सदेदृक् पुण्यार्हन् ! मम भवतु ते पूजनविधौ॥२०॥

(यह पढ़कर पुष्पांजलि छोड़ें)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः **श्री शान्तिधारा** श्री वीतरागाय नमः

ॐ णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

चत्तारि मंगलं-अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा-अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष-कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षाम-डामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटिं किरिटिं घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः क्षः ह्रूं फट् सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरिहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दिव्यधवनि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय म्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय चामरोज्ज्वलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय चामरोज्ज्वल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय सिंहासन-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय भामण्डलसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय भामण्डल-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय दुन्दुभिसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय दुन्दुभि-सत्प्रातिहार्य शोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्य-मण्डिताय छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-शोभनपदप्रदाय ख्म्ल्व्र्यूं-बीजाय सर्वोपद्रवशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय प्रातिहार्यष्टसहिताय बीजाष्टमण्डन-मण्डिताय सर्वविघ्नशान्तिकराय नमः सर्वशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदारणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंगमहाणिमित्त कुसलाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणबंभयारीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायद्णाणं सर्व शान्तिर्भवतु।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो महदि महावीर वद्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।

जस्संतियं धम्मपहं णियंच्छे, तस्संतयं वेणइयं पउं जे।
कायेण वाचा मणसा विणिच्चं, सक्कारएतं सिरपंच मेण।

तब भक्ति-प्रसादालक्ष्मी-पुर-राज्य-गेह-पद-भ्रष्टोपद्रव-दारिद्रोद् भवोपद्रव-स्वचक्र-परचक्रोद्भवोपद्रव-प्रचण्ड-पवनानल-जलोद्भवोपद्रव -शाकिनी-डाकिनी-भूत-पिशाच-कृतोपद्रव-दुर्भिक्षव्यापार-वृद्धिरहितोपद्र वाणां विनाशनं भवतु।

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। श्रेष्ठी श्री..... .....सर्वेषां पुष्टिरस्तु। सृष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। श्री सद्धर्मबलायुरा-रोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णकल्याणं मंगलरूप-मोक्ष-पुरुषार्थश्च भवतु।

प्रध्वस्त-घातिकर्माणः केवलज्ञान-भास्कराः।
कुर्वन्तु जगतां शान्तिः वृषभाद्यः जिनेश्वराः॥

उपजाति छन्द

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्रसामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥
मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥
भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा ! हा ! डूबो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥
जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदूँ स्वयमेव॥२॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदूँ मन वच काय॥३॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥इति मंगल पाठ॥

पूजा-विधि प्रारम्भ्यते

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।
ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धाम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपिवत्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥

अपराजित-मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥

एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥

अर्हमित्यक्षरं बह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यतम्॥६॥

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे जिनवांङमहं यजे॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्।
स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्॥
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्।
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय।
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय॥
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्ज्जित-दृङ् मयाय।
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥

स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय॥
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्गमाय।
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥

द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं।
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गान्।
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।४।।

अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि।
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।।
अस्मिन्ज्वल-द्विमल-केवल-बोधवह्नौ।
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।५।।

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति-मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांस स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधान।

।।पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति-क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वास्तिक्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंङ्घावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गगण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषांविषा दृष्टिविषांविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥इति परमर्षिस्वस्तिमंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवदेवता पूजन

(आ० वसुनंदी मुनि)

स्थापना

त्रलोक्य में तिहुँ काल में, नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता॥
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत, जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा॥

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निाहितो भव भव वषट् सन्निाधिकरणं।

अष्टक (छंद-हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधिा नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतु, आये आप समीप हैं।

संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुःख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

छंद-लक्ष्मीधरा

देव सर्वज्ञप्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रतिहार्य युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥१॥

सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥२॥

दर्श और ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥३॥

हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥४॥

राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥५॥

भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥६॥

देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥७॥

सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति करके बनेंगे वे मुक्तिकांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं॥८॥

घत्ता

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी॥
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे॥

ॐ ह्रीं अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधान प्रारंभ

श्री अजितनाथ जिन पूजन

स्थापना

तर्ज–अनादिकाल से.... (समुच्चय पूजन)

कर्म जीत निज प्रीति अजित जिन हे सर्वज्ञ त्रिलोकीनाथ।
मन वच तन से भक्तिभाव से तव चरणों में टेकें माथ॥
उर की उग्र व्यग्रता वश ही आज तुम्हें हम बुला रहे।
अपने चित् की निर्मल शय्या पर हम शाश्वत सुला रहे॥1॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम प्राणों में रच जाओ।
घृत सम रच जाओ आतम में पथ्य भोज्य सम पच जाओ।
आतम के हर एक अंश पर हे जिन तुम्हें बसाता हूँ।
तुम जैसा बनने की खातिर मैं तव पूज रचाता हूँ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल स्वभाव से शीतल है अरु निर्मलता भी इसका भाव।
जल तव चरणों में क्षेपण कर, मैं भी पाऊँ नित्य स्वभाव॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दनादि शीतल पदार्थ सब तन का ताप मिटाते हैं।
चेतन की शीतलता पाने तुम को गंध चढ़ाते हैं॥

क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत पुनर्जन्म से क्षत है उज्ज्वल है अरु अविकारी।
हे जिन तव पद पुंज चढ़ा हम गहें पन्थ जो हितकारी॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगंधित सुंदर कोमल मन को सदा लुभाता है।
तव पद में जो इसे चढ़ाता उसको निज गुण भाता है॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

वैद्य नहीं नैवेद्य जगत में फिर भी भविजन खाते हैं।
क्षुधा भुक्ति के वांछक जन ही, तुमको सदा चढ़ाते हैं॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लौकिक दीपक सूर्य चन्द्र भी अंतर तम नहीं हर पाये।
अन्तर तक को हरने हेतु दीप जला कर हम लाये॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशदिश दशविध धूप जलाकर कर्म एक भी नहीं टला।
तव चरणों में खेकर इससे मिल जाती है सिद्ध शिला॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवफल के बिन निष्फल ही सब षट् ऋतुओं के फल जानो।
मोक्ष महाफल ही सत् फल है रत्नत्रय का फल मानो॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम॥
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फलादि वसु द्रव्य मिलाकर तव चरणों में लाए हैं।
ज्ञान दर्श चारित्र सुखादि वसु गुण पाने आये हैं॥
क्षेत्र बटेश्वर के अजितेश्वर मम चेतन हो तेरा धाम।
तव भक्ति से भवदधि तिरके, पावें शिव शाश्वत विश्राम॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

चौपाई छंद

ज्येष्ठ अमावस गर्भ में आये, विजयादेवी अति सुख पाये।
देवों ने आ हर्ष मनाया, धनद् रतन नव माह लुटाया॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्ण-अमावस्यायां गर्भकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ सुदी दशमी अति प्यारी, जन्म हुआ तिहुँ लोक सुखारी।
मेरु पर सुर न्हवन कराया, इन्द्रों ने आनंद रचाया॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुक्लदशमीदिने जन्मकल्याणप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघु सुदी दशमी तप धारा, भव तन भोग अनित्य निहारा।
पंच मुष्टि कर लोंच सुकीना, निज में निज वे हुए सुलीना।।

ॐ ह्रीं अर्हं माघशुल्कदशमीदिने तपकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष सुदी ग्यारस शुभ नामी, केवलज्ञान लह्यो जिन स्वामी।
समवसरण देवेन्द्र रचाया, भव्यों को जिन तत्त्व बताया।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्ला-एकादशीदिने ज्ञानकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी पाँचें शिवदायी, कूट सिद्धवर मुक्ति पाई।
शाश्वत शुद्ध रूप निज पाया, सिद्धालय आवास बनाया।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लपंचमीदिने मोक्षकल्याणकप्राप्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

चौपाई छंद

हे प्रभु अजितनाथ जिनदेवा, करें सभी हम तव पद सेवा।
भक्ति से सब अघ मिट जाते, पुण्य कुंज उर में खिल जाते।।
रोग शोक भयनाशक पूजा, इस समय पुण्य नहीं कोई दूजा।
जिनवर की जो भक्ति करते, जनम-जनम के पातक हरते।।
आधि-व्याधि सब कष्ट मिटावें, अजितनाथ जिन पूज रचावें।
हर मंगल को दर्शन करना, अन्तराय सिन्धु से तरना।।
मंगल को तुम मीठा छोड़ो, अजितनाथ से नाता जोड़ो।
दीपक ध्वज फल मिष्ठ चढ़ाओ, अपना सोया भाग्य जगाओ।।
पंच वर्ण की ध्वजा चढ़ावें, अरु गौ घृत का दीप जलावें।
खाली हाथ कभी न आना, लड्डू फल पकवान चढ़ाना।।
भक्तिभाव से पूज रचाते, मनवांछित फल वो पा जाते।
धन की कमी कभी न होगी, भवसुख भोगि बनो फिर योगी।।
शौरीपुर जिन भूमि कहायी, जिसने यहाँ की शुभ रज पाई।
उसका सोया भाग्य जगा है, अशुभ कर्म सब तुरत भगा है।।

सुर नर मुनि गण वंदन आते, प्रभु दर्शन से सब सुख पाते।
भक्तिभाव वश भक्त पुकारें, अजितनाथ मम ओर निहारें॥
घोर असाता में दे साता, तव भक्ति चिंतित फल दाता।
मिटे नहीं जब तक भव फेरा, पद-कमलों में रहे बसेरा॥
तव चरणों में दास पड़ा है, कर्मों ने इसको जकड़ा है।
मेरा बेड़ा पार लगाओ, भवबंधन से शीघ्र छुड़ाओ॥

छंद-दोहा

करूँ नित्य ही वन्दना, अजितनाथ जिनदेव।
जबलौं शिव-पद ना लहूँ, करूँ चरण नित सेव॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छंद-घत्ता

हे अजित जिनन्दा, नशि विधि फंदा, अन्तर द्वन्दा परिहारी।
शिवसुख के कन्दा, यजि रवि चन्दा, मुनि सुर वृन्दा हितकारी॥
वसुनन्दी ध्यावे, पूज रचावे, तव गुण गावे पार करो।
भवदधि तिर जाऊँ शिवसुख पाऊँ, सबका ही उद्धार करो॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

प्रथम वलय

(अनन्त चतुष्टय के अर्घ्यं)

तर्ज - अनादिकाल से जग में...

दर्शन आवरणी कर्मों को किया नष्ट है तुमने देव।
केवल दर्श आपने पाया इन्द्र नरेन्द्र करी तव सेव॥
अपने दर्शन की आवरणी को भी मैं तो नाश करूँ।
तबलों अजितनाथ युग पद में अहो रात्रि मैं वास करूँ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तदर्शनसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म आपने पूर्ण क्षीण कर दीना है।
लोकालोक प्रकाशक पाया केवल ज्ञान नवीना है।।
वही स्वभाविक ज्ञान निजी मैं निज में ही प्रकटाऊँग।
तबलों अजितनाथ जिनवर को निशदिन अर्घ्य चढ़ाऊँगा।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तज्ञानसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मोहनीय दुख का दाता भव का परमुख कारण है।
दर्शन और चरित्र दोनों का किया आपने वारण है।।
अष्टाविंशति मोहनीय हनि सुख अनंत तुम पाया है।
वही अनंत सुख पाने हेतु मैंने अर्घ्य चढ़ाया है।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तसुखसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तिहीन हो भव-भव भटके, अंतराय आधीन हुए।
तुमने नष्ट किया पल भर में और पूर्ण स्वाधीन हुए।।
नंत शक्ति को पाकर तुमने शिव-रमणी परणाई है।
अपनी मुक्ति-रमा को पाने मैंने पूज रचाई है।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तवीर्यसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

दर्शन ज्ञान नंत सुख वीरज, घाति नाशि कर पाया है।
अनंत चतुष्टय पाने हेतु, मैंने अर्घ्य चढ़ाया है।।
अजितनाथ की पूजन करने, क्षेत्र बटेश्वर आया हूँ।
बटुकेश्वर तव भक्ति करके, मन में अति हर्षाया हूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तदर्शनादि-अनन्तचतुष्टयसंयुक्ताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

द्वितीय वलय

(अष्ट प्रातिहार्यों के अर्घ्यं)

तर्ज-नीर गंध अक्षतान्....

तरु अशोक के समीप आप हैं विराजते।
ज्यों क्षितिज शीश पे है भास्कर सु राजते।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरुसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य शोभनीय पीठ सिंह से है भासता।
हैं अधर जिनेन्द्र नाथ पूज्य मेरे शासता।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिंहासनसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन छत्र आप पर राजते हैं चंद्र सम।
आप नाथ लोक त्रय जानते हैं भव्य हम।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभा मंडल भासता है दिव्य देह साथ में।
भव्य निज सप्त भव देखते हैं पास में।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डलसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि नित्य ही संधि काल में खिरे।
धारता जो भव्य नर दुःख सिंधु भी तिरे।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनिसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प वृष्टि देव गण मोद पाय कर रहे।
मानों पुण्य पुंज से वे चित्त अपना भर रहे।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुरपुष्पवृष्टिसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष ढोरते सदा चौंसठी चाँवरे।
मानों मुक्ति कांत संग पड़ रही हैं भाँवरे।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं चामरसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुंदुभि से नभ गूंजता अनंत है।
जय जयकार घोष से तो होता पाप अंत है।।
श्री अजितनाथ देव, चित्त मेरे शोभते।
भव्य मुनि पुंगवों का नित्य मन मोहते।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं भामण्डलसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

अष्ट प्रातिहार्य को भजकर अष्ट कर्म को नष्ट करूँ।
वसु गुण पाकर हे जिनवर मैं मुक्ति रमा का वरण करूँ।।

जबलौं मुक्ति रमा न पाऊँ मैं द्वारे नित आऊँगा।
पूर्ण समर्पित तव पद होकर मैं तव गुण ही गाऊँगा॥

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकतरु-आदि अष्टसत्प्रातिहार्यमंडिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

(सोलहकारण भावना के अर्घ्य)

तर्ज - पीछी रे पीछी....

दर्श विशुद्धि भावना मन के, मिथ्या मल को धोवे।
जो कोई भवि भावे इसको, सो तीर्थंकर होवे॥
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनयवान् नर पुंगव होवें सर्व गुणों के धारी।
अवगुण दुःख पाप परिहारक तीरथ का अधिकारी॥
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं विनयसम्पन्नतातीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीलवान् नर सुर सुख पाकर चक्री भी बन जाता।
कल्पवृक्ष के भोग भोगकर, शिव रमणी भी पाता॥
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं शीलव्रतेष्वनतिचारतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निशदिन ही जिन वच चिंतन में लीन रहा करते हैं।
केवलज्ञान निधि वे पाते, अंतर तम हरते हैं।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संवेग भावना भाकर प्राणी, हो जाता वैरागी।
गृह तन भोगों को तजकरके होता निज अनुरागी।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं संवेगतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्याग शक्ति सम करना भैया, आगे भावन भाओ।
इसी त्याग की शक्ति से ही तुम जिनवर बन जाओ।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तिस्त्यागतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशविध तप शिव सुख दाता, आतम शोधक भाई।
तप शक्ति गणधर भी तो, पूरी न कह पाई।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तितस्तपतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु समाधि में सह योगी, बनता मन वच तन से।
पूजनीय वह निश्चित होता, जग में हर जन जन से।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं साधुसमाधितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्ति करने से नहीं आधि व्याधि दुःख होवे।
कामदेव सम काया पाकर, बीज मोक्ष का बोवे।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैय्यावृत्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हद् भक्ति अर्हद् पद की निश्चित दाता जानो।
जो भी भवि जन पूज रचावे सो भावी शिव मानो।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हद्भक्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार पालने वाले हैं अचार्य हमारे।
कलिकाल तीर्थंकर सम हैं जिनवृष के रखवारे।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं आचार्यभक्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांग धारी मुनि पाठक ज्ञान ध्यान तप लीना।
भक्ति वंदन पूजा करके बनो आप परवीना।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुततीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन वा मुनिवर की भक्ति सर्व असाता नाशे।
पाप पंक प्रक्षालक सुख का यही जिनागम भासे।।

षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनभक्तितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षड् आवश्यक श्रावक यति के पाले अरु जो पूजे।
लोक पूज्य तीर्थंकर बनकर, मुक्ति रमा पति हूजे।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं आवश्यकपारिहाणितीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म प्रभावक हैं जो ज्ञानी, जिन शासन जयवंता।
सिद्धालय में जाय विराजे, बने कर्म के हंता।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गप्रभावनातीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वत्सल भाव धरे जो प्राणी, जीव मात्र उपकारी।
राग द्वेष अरु कर्म विजेता, बने अजित अविकारी।।
षोडशकारण शिव सुख कर्ता, भाओ नित मम भाई।
जीव मात्र उद्धारक ये हैं, व्रत युत पूज रचाई।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रवचनवत्सलत्वतीर्थंकरनामकर्मणः कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महार्घ्य

षोडश कारण शिव सुख जननी, तीर्थंकर पद दाता।
शुद्ध भाव से जो भवि भावे, तीर्थंकर बन जाता।।
मैं भी अजितनाथ के पद में, नित प्रति अर्घ्य चढ़ाऊँ।
आज नहीं तो अन्य कभी भी, तुम-सा ही बन जाऊँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्शनविशुद्धि आदिषोडशकारणभावनातीर्थंकरनामकर्मण: कारणभूताय तत्फलसंयुक्ताय च श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय

(10 जन्मातिशय + 10 केवलज्ञानातिशय + 14 देवकृतातिशय के अर्घ्य)

तर्ज - पाँचों मेरु असी जिनधाम...

अतिशय रूप सुगंधित पाय, निशदिन पूजों चित हुलसाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तरूपवान् जन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

पुष्प समा सुरभित तन पाय, सुरतरु के शुभ पुष्प चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुगन्धिततनजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

निर पसेव तव सुन्दर काय, स्वर्ण गिरि सम द्युति प्रकटाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वेदाभावजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

करें आहार निहार न होय, सुर सम तव निश्चल तन जोय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥

अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं निहाराभावजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

हितमित प्रिय वचन नित गाय, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रियहितमितवचनजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

हरि हर चक्री को बल थाय, तुम बल को कोउ पार न पाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुल्यबलजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

धेनु वत्स सम निर्मल भाव, रुधिर श्वेत होता सम भाव।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्वेतरुधिरजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

शुभ लक्षण तन में उपजाय, महापुण्यफल दाता भाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव।।

ॐ ह्रीं अर्हं 1008 शुभलक्षणयुक्त तनजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

समचतुरस्र संस्थान स्वरूप, तुमको जपें इंद्र मुनि भूप।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥

ॐ ह्रीं अर्हं समचतुरस्रजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

संहनन वज्र वृषभ नाराच, व्रज समान कर्म गिरी वाँच।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥
अतिशय जिनवर के शुभ गाय, हर अतिशय पर अर्घ्य चढ़ाय।
यजूँ जिनदेव जय जय अजितनाथ जिनदेव॥

ॐ ह्रीं अर्हं वज्रवृषभनाराचसंहननजन्मातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥110॥

तर्ज – मेरी लगी गुरु संग प्रीत

शत योजन कियो सुभिक्ष, देवों ने आकर।
तुम हुए अजित भगवंत, केवल बुध पाकर॥
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकशतयोजनसुभिक्षता-केवलज्ञानतिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

करते प्रभु गगन गमन, कमलों से ऊपर।
सुर नर पशु गमन करें, नभ में वा भू पर॥
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
नित जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी॥

ॐ ह्रीं अर्हं गगनगमन-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥12॥

चऊँदिशि तव वदन दिखें केवल का अतिशय।
तव पद पूजें जे नर, पावें गुण अतिशय॥

मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दिश मुख मंडल केवलज्ञानातिशय गुण मण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

तुम अदया भाव विहीन, करुणामय स्वामी।
सब जीव शरण तव पाएँ, सुख भी अविरामी।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं अदयाभाव-अभाव-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

उपसर्ग रहित जिनदेव, जीवों के रक्षक।
शुभ अतिशय केवलि का, पापों का भक्षक।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपसर्गकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

तुम कवलाहार विहीन, जिनवर मम देवा।
मम क्षुधा नशाओ देव, करते नित सेवा।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं कवलाहाराभाव-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

विद्याधर आतम लीन ईश्वर बड़ भागी।
छद्मस्थ होत मदहीन संग उभय त्यागी।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्या-ईश्वरत्वकेवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

नख केश वृद्धि हो नाहिं, केवल की महिमा।
तुम पाप रहित जिनदेव, को गाये गरिमा।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं नखकेशवृद्धिविहीन-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

तव अनिमिष दृष्टि अपार, शक्ति घनी वर्ते।
नित लोकालोक निहार, ज्ञान तनी झलके।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिमिषदृष्टि-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

तन छाया रहित जिनेश, अतिशय ये पाया।
चउ घाति विहीन महेश, तव पद मन माया।।
मम प्राणेश्वर भगवान अजितेश्वर स्वामी।
निज जजें चरण द्वय नाथ होवें शिवगामी।।

ॐ ह्रीं अर्हं तनछायारहित-केवलज्ञानातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

खिरे अर्धमागधी भाष, निज गुण प्रकटाने।
करूँ अष्ट द्रव्य से पूज, शिव रमणी पाने।।
मुझे मिल गए मन के मीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्धमागधीभाषासुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

चहुँ दिश हो मैत्री भाव बैर विनश जाने।
गर हों भी विरोधी जीव प्रेम से मिल जाने।।
वहाँ होती मन की जीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं परस्परमैत्रीभावसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

दश दिश हो निर्मल स्वच्छ, मन शीतल पाने।
सुरकृत अतिशय सुपुनीत, सब के मन भाने।।
वहाँ होय न ग्रीषम शीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशदिशानिर्मलसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

है मेघ रहित आकाश विमल निर्मल जाने।
हर्षित झूमे आकाश भक्ति में ही माने।।
मानो बन गया गगन विनीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाकाशसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

षट् ऋतुओं के फलफूल एक संग खिल जाने।
मानो सज गई धरती आज प्रभु के गुण गाने।।
सबको हो सुख परतीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं षट्-ऋतुफलित-पुष्पफलसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

होए पृथ्वी काँच समान जहाँ जिनवर जाने।
नहीं होए कटक अरु कष्ट सभी जन सुख पाने।।
अघ होते वहाँ भयभीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं दर्पणवत् पृथ्वीतलसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

चरणों में रचते देव कमल स्वर्णिम जानें।
चउ अंगुल अधर जिनेंद्र अतिशय पहचानें।।

यह धनद कुबेर की नीति दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं चरणकमलतलस्वर्णकमल-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

जय घोष गगन से होए जिन अतिशय जाने।
नभ धरती सब गुंजाए सृष्टि प्रमुदित माने।
भवि करते पुण्य प्रहीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं नभसि जयघोषसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

बहे मंद सुगंध बयार, भव्य चित हर्षाने।
जिनवर चरणों में आए, भवातप मिट जाने।।
यह सुरगण भक्ति पुनीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं मन्दसुगन्धपवन-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

शुभ गंधोदक की वृष्टि मानो बरसे मोती।
सब चित्त विमल कर देव, आत्म मंजन करती।।
ये गंधोदक परतीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं गन्धोदकवृष्टिसुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

भूमि निष्कंटक होय जहाँ जिन गमन करें।
केवलज्ञानी जिनदेव सभी मिल नमन करें।।
नहीं रहा कष्ट का लेश दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कटभूमि-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

केवलज्ञानी जिनदेव, सभी के मन भाते।
हर्षित सृष्टि संपूर्ण, प्रमुदित हो नाचे।।
वसुधा गाए सुर गीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं हर्षितसृष्टि-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

जब गमन करें जिनदेव, चक्र आगे चाले।
उस धर्म चक्र को देख, सभी दुर्गुण भागे।
तुम चक्री धर्म अजीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रगामिधर्मचक्र-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

जय आत्मजयी जिनदेव, अमंगल सब हरते।
मंगल वसु संग चलें, कर्म सब ही टलते।।
तब महिमा वर्णनातीत दुनिया क्या जाने।
मेरी अजितनाथ से प्रीत दुनिया क्या जाने।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमंगलद्रव्य-सुरकृतातिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

महार्घ्य

जिनवर के अतिशय पूजन से, निज में अतिशय होता है।
पुण्यवान नर पुंगव ही तो पुण्य बीज शुभ बोता है।।
अजितनाथ के चरणों में जो महा अर्घ्य क्षेपण करता।
भव सागर को तैर क्षणिक में, मुक्ति रमा को वह वरता।।

ॐ ह्रीं अर्हं अत्यन्तरूपवानादि चतुस्त्रिंशत् अतिशयगुणमण्डिताय श्री अजितनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

दिव्यपुष्पांजलि क्षिपेत्

समुच्चय जयमाला

चौपाई छंद

अजितनाथ जित काम विकारी, जीव मात्र के तुम हितकारी।
तीन लोक के नाथ कहाये, भव्य जनों को तुम नित भाये॥
जितशत्रु जी पिता तुम्हारे, माँ विजयादेवी के प्यारे।
वय लख पूर्व बहत्तर पाई, जीवन पूर्ण बना सुखदाई॥
साढ़े चार शतक धनु काया, मानो सुमनों का वन पाया।
तप्त स्वर्णमय आभा तन की, पीड़ा हरती है भविजन की॥
उल्कापात विघटती देखी, बारह भावन तब तुम लेखी।
कीना पंच मुष्टि से लोचन, मुनि बन किया आप निज चिंतन॥
बारह वरष घोर तप कीना, पाया केवल ज्ञान अक्षीना।
समवसरण देवेन्द्र रचाया, भव्य जनों ने शिव पथ पाया॥
ॐकार मय खिरती वाणी, सुन कर तिर गए लाखों प्राणी।
चतुर्थ काल आदि तीर्थंकर, गिरि सम्मेद से हुए शिवंकर॥
उत्तर प्रांत भारत का प्यारा, मानों उत्तम क्षेत्र हमारा।
जिला आगरा क्षेत्र बटेश्वर, यहीं विराजे अजित जिनेश्वर॥
मूर्ति आपकी अतिशयकारी, अर्चन से बनते अविकारी।
क्षेत्र बटेश्वर जग में प्यारा, शौरीपुर का है शुभ द्वारा॥
भूप सुप्रतिष्ठित अरु विमलासुत, धन्य श्रमण अरु अमला युत।
मुक्ति आपने यहाँ से पाई, सबको शिव की राह बताई॥
सिद्धक्षेत्र शौरीपुर पावन, उत्तम साधक को मन भावन।
वीतराग सर्वज्ञ दिगंबर, अजितनाथ की प्रतिमा सुंदर॥
आल्हा ऊदल ने बनवाई, बावन गढ़ जीते नर राई।
कच्चे धागे से तुम आये, आते ही अतिशय दिखलाये॥

सबसे ऊँचा अजित जिनालय, सेवक-सम हैं अन्य शिवालय।
यमुना उल्टी यहाँ पर बहती, भव्यों से ये अतिशय कहती॥
होय अदालत में जो उलझा, प्रभु भक्ति से निश्चित सुलझा।
मंगल शनि राहु अरु केतु, पूजन से मिलता शिव सेतु॥
दीपक ध्वज फल मिष्ट चढ़ाओ, अपना सोया भाग्य जगाओ।
रोग शोक दुःख मिटता सारा, खुलता सर्व सुखों का द्वारा॥
होय विघ्न घर में अति भारी, यात्रा भौम करि सुखकारी।
नाम मात्र जो जपता प्राणी, निश्चित सिद्ध बने वह ज्ञानी॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अजितनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप – ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविघ्नहराय सर्वकार्यसिद्धिकराय
श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः।

दोहा

अजितनाथ के युग्म पद, जो उर लेत बसाय।
नर सुख सुर सुख भोगकर, निश्चित मुक्ति पाय॥

शान्तये शान्तिधारा

घत्ता छंद

हे अजित जिनेशा, कर्म हनेशा, मुक्ति हमेशा शिव देता।
निर्ग्रंथ सुभेषा, रमा महेशा, तव पद शेषा करि सेवा॥
हम शीश झुकाते, पूजा गाते, अर्घ्य चढ़ाते सुखकारी।
मम दुःख मिटाओ, पार लगाओ, बसो हृदय हे अविकारी॥

दिव्यपुष्पांजलि क्षिपेत्

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवज्झाय पूजूँ, साधू पूजूँ भाव सों॥
अरहन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी॥

सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावनाषोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥

कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जप, होय पति शिव गेह के॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारितानुमोदनैः सहितं श्री अरिहन्त-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-पञ्च परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शनसम्यग्ज्ञानसम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल-थल-आकाश-गुहा-पर्वत-नगरवर्ति-ऊध्वे-मध्य-अधोलोकेषु विराजमान-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिन-चैत्यालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान-विंशतितीर्थङ्करेभ्यो नमः। पञ्च-भरत-पञ्च-ऐरावत-दशक्षेत्र-सम्बन्धि-त्रिंशत्-चतुर्विंशतिगत-विंशत-उत्तर-सप्तशत-जिनबिम्बेभो

नमः। नन्दीश्वरद्वीप-सम्बन्धि-द्वीपञ्चाशत् जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पञ्चमेरुसम्बन्धि-अशीति-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर-कैलाश-चम्पापुर-पावापुर-गिरनार-सोनागिरि-राजगृही-मथुरा-शत्रुञ्जय-तारङ्गा-कुण्डलपुर आदि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढबद्री-हस्तिनापुर-चन्देरी-पपौरा-अयोध्या-चमत्कारजी-महावीरजी-पद्मपुरी-तिजारा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः श्रीचारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपावतं श्रीवृषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थङ्करपरमदेवं आद्यानां जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे....नाम्नि नगरे....मासानामुत्तमे...मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे.... मुन्यार्यिका-श्रावक-श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं अनर्घ्यपदप्राप्तये सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति-पाठ (भाषा)

चौपाई

शांतिनाथ मुख शशि-उनहारी, शील-गुण-व्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं॥
पंचम चक्रवर्ति पद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र-नरेन्द्र पूज्य जिन-नायक, नमो शांति-हित शांति विधायक॥

दिव्य विटप बहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शांति-जिनेश शांति सुखदाई, जगत पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को॥

(वसन्ततिलका)

पूजै जिन्हें मुकुट-हार-किरीट लाके।
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥
सो शांतिनाथ वर-वंश जगत प्रदीप।
मेरे लिए करहुँ शान्ति सदा अनूप॥

(इन्द्रवज्रा)

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र-सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।

(स्रग्धारा)

होवै सारी प्रजा को सुख बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिल भर न रहें, व्याधियों का अंदेशा।।
होवे चोरी न जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर-वृष को, जो सदा सौख्यकारी।।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

(मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का।
सद्वृत्तों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।।
बोलूँ प्यारे वचन हित के आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने।।

अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से।

हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

विसर्जन पाठ

क्षमापना

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥१॥
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान्।
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करहु भगवान॥२॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥३॥
आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति-प्रमाण।
ते अब जावहुँ कृपा कर, अपने-अपने धाम॥४॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप एवं गवासन में बैठकर नमस्कार करें।)

आरती

शक्ति दर्श सुख ज्ञान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान् की॥

बटुक नाथ जिनदेव हमारे, मणिया देव कहाते हैं।
इन्द्र देव गण पूजन करने, रत्न दीप फल लाते हैं॥
निज आतम के ध्यान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान् की॥

गर्भ जन्म तप अवधपुरी में, केवल बुध भी पाया है।
कूट सिद्धवर शिखर गिरि से, मोक्ष महाफल पाया है॥
सिद्धालय उद्यान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान् की॥

आल्हा ऊदल ने भक्ति से, बावन गढ़ ये जीते हैं।
जो भी आरती करे आपकी, शुद्धातम रस पीते हैं॥
शुभ शिवमग परधान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान् की॥

मंगल को जो मीठा तज के, व्रत जप-पूजन करते हैं।
अजितनाथ की करें अर्चना, वे भव वारिधि तरते हैं॥
आतम के सम्मान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान् की॥

निज आतम के सब गुण पाने, मैं चरणों में आया हूँ।
दुनियाँ में सुख मिला कहीं ना, भव-भव में भरमाया हूँ॥
शौरीपुर शुभ थान की, मम प्राणों के प्राण की।
आओ उतारें आज आरती, अजितनाथ भगवान् की॥

श्री अजितनाथजिनस्तवनम्

–आचार्य समन्तभद्र स्वामी कृत

यस्य प्रभावात् त्रिदिव-च्युतस्य
क्रीडास्वपि क्षीवमुखाऽरविन्दः।
अजेयशक्तिर्भुवि बन्धुवर्गश-
चकार नामाऽजित इत्यबन्ध्यम्॥1॥

अर्थ–जिनके प्रभाव से जो देव स्वर्ग से अवतीर्ण हुए, उनका कुटुम्बी समूह बालक्रीड़ाओं में भी हर्षोन्मत्त मुख-कमल से युक्त हो जाता था तथा जिनके प्रभाव से वह बन्धुवर्ग पृथ्वी पर अजेय शक्ति का धारक रहता था और इसलिए उस बन्धुवर्ग ने जिनका अजित यह सार्थक नाम रखा था।

अद्याऽपि यस्याऽजितशासनस्य
सतां प्रणेतुः प्रतिमङ्गलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परम-पवित्रं
स्वसिद्धिकामेन जनेन लोके॥2॥

अर्थ–परवादियों के द्वारा अविजित अनेकान्त मत से युक्त तथा सत्पुरुषों के प्रधान नायक जिन अजितनाथ भगवान् का अत्यन्त पवित्र नाम आज भी अपने मनोरथों की सिद्धि के इच्छुक जन-समूह के द्वारा प्रत्येक मंगल के लिए सादर ग्रहण किया जाता है।

यः प्रादुरसीत्प्रभुशक्तिभूम्ना
भव्याऽऽशयालीनकलङ्कशान्त्यै।
महामुनिर्मुक्त-घनोपदेहो
यथाऽरविन्दाऽभ्युदयाय भास्वान्॥3॥

अर्थ–ज्ञानावरणादि कर्मरूप सघन आवरण से रहित जो गणधरादि देवों में प्रधान अथवा प्रत्यक्षज्ञानी अजितनाथ भगवान् भव्यजनों के हृदय में संलग्न अज्ञान अथवा उसके कारणभूत ज्ञानावरणादि कर्मरूप कलंक

की शांति के लिए जगत् का उपकार करने में समर्थ वाणी के माहात्म्य विशेष अथवा प्रभुत्वशक्ति की प्रचुरता से उस तरह प्रकट हुए थे, जिस तरह कि मेघरूप आच्छादन से मुक्त सूर्य कमलों के विकासरूप अभ्युदय के लिए प्रकट होता है।

येन प्रणीतं पृथु धर्म-तीर्थं
ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम्।
गाङ्गं ह्रदं चन्दन-पङ्क-शीतं
गज-प्रवेका इव घर्म-तप्ताः।।4।।

अर्थ–जिन अजितनाथ भगवान् के द्वारा प्रकाशित अत्यन्त विस्तृत एवं श्रेष्ठ धर्मरूपी तीर्थ अथवा धर्म के प्रतिपादक श्रुत को पाकर भव्यजीव संसार-परिभ्रमण रूप क्लेश को उस तरह जीत लेते हैं, जिस तरह कि सूर्य के आताप से पीड़ित बड़े-बड़े हाथी चन्दन के द्रव्य के समान शीतल गंगा नदी के द्रह-अगाध जल को पाकर सूर्य के संताप दुख को जीत लेते हैं।

स ब्रह्मनिष्ठः सममित्र-शत्रु-
र्विद्याविनिर्वान्त-कषाय-दोषः।
लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा
जिनश्रियं में भगवान् विधत्ताम्।।5।।

अर्थ–जिन्होंने परमागम के ज्ञान और उसमें प्रतिपादित मोक्षमार्ग के अनुष्ठान रूप विद्या के द्वारा कषायरूपी दोषों को अथवा द्रव्य क्रोधादिरूप कषाय और भाव क्रोधादि रूपी दोषों को बिल्कुल नष्ट कर दिया है, जो शुद्ध आचरणस्वरूप में स्थित हैं, जिन्हें मित्र और शत्रु समान हैं, जो आत्मा की अनन्त ज्ञानादि रूप लक्ष्मी को प्राप्त कर चुके हैं और जिन्होंने अपने आपको जीत लिया है अर्थात् जो इन्द्रियों के अधीन नहीं हैं, वे अन्तरंग-बहिरंग शत्रुओं के द्वारा अपराजित अजितनाथ भगवान् मेरे लिए आर्हन्त्य लक्ष्मी-अनन्त ज्ञानादि विभूति प्रदान करें।

श्री अजितनाथ चालीसा

अजितनाथ जिनराज को, सुमरुँ मैं दिन-रात।
नाथ शरण में लीजिए, तव पद में मम माथ॥
पंच परम गुरु को नमूँ, नमूँ सरस्वती मात।
चालीसा लिखकर लहूँ, वसु भू की सौगात॥

(चौपाई छंद)

अजितनाथ जिन त्रिभुवनराई, भक्त जनों के तुम्हीं सहाई।
चौथे युग के प्रथम जिनेशा, हरते सब दारिद्र किलेशा॥1॥
अवधपुरी नगरी शुभ नामी, तव पितु जितशत्रु नृप स्वामी।
मात विजयसेना सुतरामा, नरवट रोहिणी सोहे श्यामा॥2॥
तज वैजयन्त विमान सिधाये, सोलह सपने शुभ दर्शाए।
मातस जेठ गर्भ कल्याना, सुर वरषायें रतन खजाना॥3॥
श्री ह्री आदि अष्ट देवियाँ, सुश्रुषा में माँ की दिन रतियाँ।
करे कोई सिंगार सुरूपा, वस्त्राभूषण देय अनूपा॥4॥
सुख से बीत गये नव मासा, फली पर्ण सबकी अभिलाषा।
माघ सुदी दसमी सुअनूपा, जनमें तीर्थंकर जगभूपा॥5॥
घंटा सिंह शंख अरु भेरी, अनहद नाद हुये बहु तेरी।
इन्द्रासन कम्पित हो, जबहि, दिव्य ज्ञान से ज्ञानो तब ही॥6॥
जनमें है जगपति तीर्थेशा, सप्त पैढ़ चलि नमित सुरेशा।
चढि ऐरावत तत्क्षण आयो, परिकर युत कौशल पुर धायो॥7॥
तीन प्रदक्षिण सुरपति दीना, हो विनीत अति उत्सव कीना।
महल पहुंच बहु स्तुति गाई, मात पिता की पूज रचाई॥8॥
माया निद्रा मात सुलाई, तीर्थंकर बालक शचि लाई।
सहस्त्रनयन कर लखत सुरेशा, रुप अनूपम घर जिनेशा॥9॥
मेरु सुदर्शन गिरी अनोखा, पाण्डुशिला आसन अभिलेखा।
क्षीर सिंधु जल सुर भर लाए, सहस्त्र कलश से जिन नहलाए॥10॥
इन्द्राणि शिशु करि श्रृंगारा, मन में हर्षित शचि अपारा।
पग में गज शुभ चिन्ह् निहारा, अजित नाम सुरपति उच्चारा॥11॥
नाचत गावत भक्ति समेता आये सुरगण पुर साकेता।
ताण्डव नृत्य इन्द्र रचाया, आनंदोत्सव खूब मनाया॥12॥
बालक बढ़े ज्यों दोज का इंदु, गुण गंभीर बसे ज्यों सिंधु।
कंचन वर्ण सुतन की शोभा, लखत मिटे सब माया लोभा॥13॥
अमृत सम भोजन सुर लाते, वस्त्राभूषण स्वर्ग से आते।
लक्षण सहस्त्र अठोत्तर शोभित पुण्य शशि से प्रभुवर मंडित॥14॥
बाल सखा बन देव सुआते, नाना विधि शुभ खेल रचाते।
हुये वर्ष अष्टम सुकुमारा, अघहारी तब अणुव्रत धारा॥15॥
पाई तुमने जब तरुणाई, बजी विवाह की तब शहनाई।
भोगत योग अनेक प्रकारा, वैभवयुत अतुलित बल धारा॥16॥
बहुकाल अति सुख सों बीता, पुण्य रूप दुःख से पारीता॥
उल्कापात को देख गगन में, कली खिली वैराग्य की मन में॥17॥
बारह भावन निज मन भाए, लौकान्तिक सुर संस्तुति गाए।
अजितसेन वय सुत सुप्रवीणा राजतिलक जिसका झट कीना॥18॥

सुप्रभ शिविका पर बिठलाकर देव ले चले तब थुति गाकर।
गये सहेतुक वन तप काजा, सप्तपर्ण तरु की ले छाया।।19।।
नमः सिद्ध कहि सुव्रत धारे, तज आभूषण वसन उतारे।
पंचमुष्टि कचलोंच है कीना, मेघ दिगम्बर धर अघहीना।।20।।
माघ शुक्ल नवमी तिथि प्यारी, सहस्त्र नृपति संग दीक्षाधारी।
मनपर्यय शुभ ज्ञान उपायों, परम विशुद्धी भाव जगायो।।21।।
ब्रह्मदत्त नरपति गुण गाए, वे अहार परथम हर्षाये।
पंचाश्चर्य देवगण करते, नभ से जय-जय घोष उचरते।।22।।
बारह वर्ष घोर तप करके, शुक्ल ध्यान की सीढी चढ़के।
पौष शुक्ल ग्यारस तिथि आई, केवलज्ञान ज्योति प्रगटाई।।23।।
चार घातिया कर्म नशाई, नंत चतुष्टय निधि तुझ पाई।
झलके लोकालोक ज्ञान में, पर स्थित तुम आत्म ध्यान में।।24।।
सिंहसेन आदि को लेकर, धर्म बतावे नब्बे गणधर।
प्रमुख आर्यिका कुटजा गणिनी, सुविशिष्ट श्रुत ज्ञान की धरिनी।।25।।
चक्री सगर मुख्य ये श्रोता दर्श आपका सब अघ घोता।
समवशरण में खिर गयी वाणी, स्याद्वाद मय भवि कल्याणी।।26।।
अजित प्रभु तव शासन माहि, समवशरण सर्वत्र सु ठाहिं।
इक सौ सत्तर तीर्थ जिनेशा, ढाई द्वीप मांहि अखिलेशा।।27।।
आप वंश इक्ष्वाकु अधीशा, काश्यप गोत्र प्रधान मनीषा।
साढ़े चार शतक धनु काया, उत्तम सहनन अरु संठाया।।28।।
नंत ज्ञान दर्शन सुख वीरज पाया करके निज मन धीरज।
करके आर्यावर्त्त विहारा, भविजन का कीन्हा निस्तारा।।29।।
एक माह फिर योग निरोधा, जीते अजित वसु अरि योधा।
चैत सुदी पंचम शुभ जानो, पायो शाश्वत पद निरवानो।।30।।
गिरि सम्मेद शिखर पर आये, सिद्धवर कूट से मुक्ति पाये।
आयु पूरब लक्ष बहत्तर, सिद्ध हुये प्रभु बन लोकोत्तर।।31।।
नखट रोहिणी हुई सुमीता, पंचकल्याणक हुये पुनीता।
वसुगुण प्रकटाए निज आतम, स्वामी हुये निकल परमातम।।32।।
अजितनाथ जिन कर्म विजेता, तुम सर्वज्ञ तुम्हीं शिवेनता।
अविनाशी अविकार गुणीशा, शत इन्द्रों से पूज्य जिनेशा।।33।।
जो कोई लेवे शरण तिहारी, नाम लेत नशती बीमारी।
पूजे जो नित सांझ-सवेरे, कट जाते भव-भव के फेरे।।34।।
खास दास की अरज सुनीजै, चरण शरण हमको रख लीजै।
निश्छल मन युत कहि जिनराई, भवसागर से पार लगाई।।35।।
अजितनाथ को जो नित ध्यावै, उभय विजय सुंदरि परिणावै।
हारी बाजी जीत करावै, अजितनाथ पद शीश नवावै।।36।।

चालीसा चालीसा दिन, नित चालीस ही वार।
पाठ करें सुमिरन करैं, खुलैं मुक्ति का द्वारा।।
अजितनाथ जिनदेव प्रभु, नंतगुणी हो आप।
भव-भव के पातक कटें, हरो सकल संताप।।
तव गुण शीश अनंत है, लघु है मेरे हाथ।
भक्तिवश ही पद रचा, शक्ति विहीन हूँ नाथ।।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

प्रथमानुयोग साहित्य

1. नंगानंग कुमार चरित्र
2. मौन व्रत कथा
3. व्रताधीश्वर रोहिणी व्रत
4. प्रभंजन चरित्र
5. चारूदत्त चरित्र
6. सीता चरित्र
7. सप्त व्यसन चरित्र
8. वीर वर्द्धमान चरित्र
9. देशभूषण कुलभूषण चरित्र
10. चित्रसेन पदमावती चरित्र
11. सुदर्शन चरित्र
12. सुरसुन्दरी चरित्र
13. करकण्डु चरित्र
14. नागकुमार चरित्र
15. भद्रबाहु चरित्र
16. हनुमान चरित्र
17. महापुराण भाग-1
18. महापुराण भाग-2
19. श्री जम्बूस्वामी चरित्र
20. यशोधर चरित्र
21. व्रत कथा संग्रह
22. राम चरित भाग-1
23. राम चरित भाग-2
24. राम चरित संयुक्त प्रकाशन
25. आराधना कथा कोष भाग-1
26. आराधना कथा कोष भाग-2
27. आराधना कथा कोष भाग-3
28. शान्ति नाथ पुराण भाग-1
29. शान्ति नाथ पुराण भाग-2
30. सम्यक्त्व कौमुदी
31. धर्मामृत भाग-1
32. धर्मामृत भाग-2
33. पुण्यास्रव कथा कोष भाग-1
34. पुण्यास्रव कथा कोष भाग-2
35. पुराण सार संग्रह भाग-1
36. पुराण सार संग्रह भाग-1
37. सुलोचना चरित्र
38. गौतम स्वामी चरित्र
39. अमरसेन चरित्र
40. श्रेणिक चरित्र
41. महीपाल चरित्र
42. जिनदत्त चरित्र
43. सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
44. चेलना चरित्र
45. धन्यकुमार चरित्र
46. सुकुमाल चरित्र
47. क्षत्रचूडामणि जीवंधर चरित्र
48. चन्द्रप्रभ चरित्र
49. कोटिभट श्रीपाल चरित्र
50. महावीर पुराण
51. वरांग चरित्र
52. पांडव पुराण
53. सुशीला उपन्यास
54. भरतेश वैभव
55. पार्श्वनाथ पुराण
56. त्रिवेणी
57. मल्लिनाथ पुराण
58. विमलनाथ पुराण
59. चौबीसी पुराण
60. पदम पुराण
61. सती मनोरमा

सम्पादित संस्कृत / प्राकृत साहित्य

1. आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)
2. आराधना समुच्चय (श्री रविन्द्राचार्य)
3. उपासकाध्यय भाग-1
4. उपासकाध्यय भाग-2
5. आध्यात्म तरंगिणी (आ.श्री सोमदेव सूरि)
6. कर्म विपाक (आ.श्री सकलकीर्ति स्वामी)
7. कर्म प्रकृति (सिद्धांत चक्रवती आ.श्री. अभयचंद्र जी)
8. गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समन्तभद्र स्वामी)
9. चार श्रावकाचार (विभिन्न आचार्य)
10. जिन कल्पि सूत्रम (श्री प्रभाचन्द्राचार्य जी)
11. जिन श्रमण भारती (संकलन विभिन्न)
12. तत्वार्थ सार (श्री मदमृतचन्द्र सूरि)
13. तत्वार्थस्य संसिद्धि
14. तत्व भावना (आ.श्री अमितगति जी)
15. तत्वार्थ सूत्र (आ.श्री उमास्वामी जी)
16. तत्व ज्ञान तरंगिणी (श्रीमद् भट्टारक ज्ञानभूषण)
17. तत्व विचारो सारो (आ.श्री वसुनंदी जी)
18. धर्मरत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)
19. धम्म रसायण (आ.श्री पद्मनंदी स्वामी)

20. ध्यान सूत्राणि (श्री माघनन्दि सूरि)
21. नीति सार समुच्चय (आ.श्री इन्द्रनंदी स्वामी)
22. प्रबोधसार
23. पंच विंशतिक (आ.श्री पद्मनंदी स्वामी)
24. पंच रत्न (संकलित) (विभिन्न आचार्य)
25. प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमिचन्द्राचार्य जी)
26. पुरूषार्थ सिद्धियुपाय (आ.श्री अमृतचन्द्र स्वामी)
27. प्रभु आराधना (दशभक्तियाँ-आ. श्री पूज्यपाद स्वामी)
28. भावत्रय फलप्रदर्शी (आ.श्री कुन्थुसागर जी)
29. भगवती आराधना (आ.श्री शिवकोटी स्वामी)
30. मरणकंडिका (आ.श्री अमितगति स्वामी)
31. मूलाचार प्रदीप (आ.श्री सकलकीर्ति स्वामी)
32. योगामृत भाग-1 (मुनिश्री बालचन्द्र जी)
33. योगामृत भाग-2 (मुनिश्री बालचन्द्र जी)
34. योगसार भाग-1
35. योगसार भाग-2
36. रयणसार (आ.श्री कुन्दकुन्द स्वामी)
37. वसुऋद्धि (संकलित विभिन्न आचार्य)
38. विषापहार स्तोत्र (महाकविवर धनंजय)
39. सुभाषित रत्न संदोह (आ.श्री अमितगति स्वामी)
40. सिंदूर प्रकरण (आ.श्री सोमदेव स्वामी)
41. समाधितंत्र (आ.श्री पूज्यपाद स्वामी)
42. समाधिसार (आ.श्री समन्तभद्र स्वामी)
43. सार समुच्चय (आ.श्री कुलभद्र स्वामी)
44. रयण सार
45. नौनिधि

प्राकृत साहित्य (रचित)

1. धम्म-सुत्ति-संगहो
2. णंदिणंद-सुत्तं
3. रयणकंडो
4. रटठ-संति-महाजग्गो
5. अज्ज-सक्किदी
6. जदि-जदि-कम्मं
7. णिग्गंथ-थुदी
8. विज्जा-वसु-सावयायारो
9. सुद्धप्पा
10. जिणवर-थोत्तं
11. तच्च-सारो
12. अहिंसगाहारो
13. अणुवेख्खा-सारो
14. धम्म-सुत्तं
15. प्राकृत वाणी भाग-1

प्रवचन साहित्य

1. आईना मेरे देश का
2. उत्तम क्षमा (आत्मा का ए.सी. रूम)
3. उत्तम मार्दव (मान महा विष रूप)
4. उत्तम आर्जव (रंचक दगा बहुत दुख:दानी)
5. उत्तम शौच (लोभ पाप का बाप बखाना)
6. उत्तम सत्य (सतवादी जग में सुखी)
7. उत्तम संयम (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)
8. उत्तम तप (तप चाहे सुरराय)
9. उत्तम त्याग (निज हाथ दीजे साथ लीजे)
10. उत्तम आकिंचन (परिग्रह चिंता दु:ख ही मानो)
11. उत्तम ब्रह्मचर्य (चेतना का भोग)
12. खुशी के आँसू
13. खोज क्यों रोज-रोज
14. गुरुत्तं भाग-1
15. गुरुत्तं भाग-2
16. गुरुत्तं भाग-3
17. गुरुत्तं भाग-4
18. गुरुत्तं भाग-5
19. गुरुत्तं भाग-6
20. गुरुत्तं भाग-7
21. गुरुत्तं भाग-8
22. गुरुत्तं भाग-9
23. गुरुत्तं भाग-10
24. गुरुत्तं भाग-11
25. गुरुत्तं भाग-12
26. चूको मत
27. सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा
28. जय बजरंगबली
29. जीवन का सहारा
30. ठहरो! ऐसे चलो
31. तैयारी जीत की
32. दशामृत
33. धर्म की महिमा
34. ना मिटना बुरा है ना पिटना
35. नारी का धवल पक्ष
36. शायद यही सच है
37. श्रुत निर्झरी
38. सीप का मोती (महावीर जयंती)
39. स्वाति की बूंद

विधान रचना

1. कल्याण मंदिर विधान
2. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3. दु:खों से मुक्ति, सहस्त्रनाम विधान
4. णमोकार महार्चना
5. श्री अजितनाथ विधान
6. श्री चन्द्रप्रभ विधान
7. श्री चन्द्रपभ विधान तिजारा
8. श्री जम्बूस्वामी विधान
9. श्री मुनिसुव्रत नाथ विधान
10. श्री महावीर विधान
11. श्री शान्ति नाथ विधान
12. श्री संभवनाथ विधान
13. श्री पदमप्रभ विधान
14. श्री पुष्पदंत विधान
15. समवशरण महार्चना
16. यागमंडल विधान
17. श्री भक्तामर विधान
18. श्री नंदीश्वर विधान
19. श्री नेमिनाथ विधान
20. श्री वासुपूज्य विधान
21. पूजा अर्चना
22. अरिष्ट निवारक विधान संग्रह
23. निर्ग्रन्थ विधान
24. पंचपरमेष्ठी विधान
25. श्रद्धा के अंकुर
26. कर्मक्षय विधान
27. रक्षाबंधन विधान
28. मुनिसुव्रत विधान
29. वासुपूज्य विधान (प्रज्ञानन्द जी)
30. वासुपूज्य विधान (गुरूनंदनी)
31. समवशरण विधान
32. साप्ताहिक विधान
33. जिनसहस्त्रनाम विधान
34. पंचपरमेष्ठी विधान
35. श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान (गुरूनंदनी)

हिन्दी काव्य रचना

1. चैन की जिन्दगी
2. हीरों का खजाना
3. कल्याणी
4. हाइकु
5. क्षरातीत अक्षर
6. न मैं चुप हू न गाता हू
7. मुक्ति दूत के मुक्तक

हिन्दी गद्य रचना

1. अन्तर्यात्रा
2. आज का निर्णय
3. आ जाओ प्रकृति की गोद में
4. आहार दान
5. आधुनिक समस्यायें प्रामाणिक समाधान
6. एक हजार आठ
7. कलम पटी बुद्धिका
8. गुरूवर तेरा साथ
9. गागर में सागर
10. गुरू कृपा
11. जिन सिद्धांत महोदधि
12. डाक्टरों से मुक्ति
13. दान के अचिन्त्य प्रभाव
14. धर्म संस्कार भाग-1
15. धर्म संस्कार भाग-1
16. धर्म बोध संस्कार भाग-1
17. धर्म बोध संस्कार भाग-2
18. धर्म बोध संस्कार भाग-3
19. धर्म बोध संस्कार भाग-4
20. निज अवलोकन
21. मीठे प्रवचन भाग-1
22. मीठे प्रवचन भाग-2
23. मीठे प्रवचन भाग-3
24. मीठे प्रवचन भाग-4
25. मीठे प्रवचन भाग-5
26. मीठे प्रवचन भाग-6
27. मीठे प्रवचन भाग-7
28. मीठे प्रवचन भाग-8
29. रोहिणी व्रत
30. वसुनंदी उवाच प्रवचनांश
31. वसु विचार
32. स्वप्न विचार

33. सर्वोदयी नैतिक धर्म
34. सदगुरू की सीख
35. सफलता के सूत्र प्रवचनांश
36. संस्कारादित्य
37. हमारे आदर्श

सम्पादित अन्य हिन्दी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
2. कुरल काव्य [संत तिरूवल्लुवर (आ. श्री कुन्दकुन्द)]
3. जिन सहस्त्र नाम विधान
4. तत्वोपदेश (छहढाला)
5. दिव्य लक्ष्य संकलित
6. धर्म प्रश्नोत्तर (आ.श्री सकलकीर्ति जी)
7. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ.श्री सकलकीर्ति जी)
8. पंच परमेष्ठि विधान
9. भक्ति सागर
10. भव्य प्रमोद
11. विद्यानंद उवाच (प्रवचन-आ.श्री विद्यानंद जी मुनिराज)
12. शाश्वत शान्ति नाथत्रय विधान
13. सरस्वती उपासना
14. सुख का सागर (चालीसा संग्रह)
15. संसार का अंत
16. श्री शांतिनाथ, भक्तामर, सम्मेदशिखर विधान
17. अरिष्ट निवारक त्रय विधान

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज के जीवन चरित्र पर आधारित साहित्य

1. समझाया रविन्दू ना माना
2. दृष्टि दृश्यों के पार
3. पग वंदन
4. अक्षर शिल्पी
5. वसु-सुबन्ध (प्रो. डॉ. उदयचन्द जी जैन) महाकाव्य)
6. वसुनंदी - प्रश्नोत्तरी (प्रेस में)

संस्कृत टीका रचना

1. प्रमेया टीका रत्न माला
2. वसुधा टीका

इंगलिश रचना

1. Inspirational Tales Part-1
2. Inspirational Tales Part-2

वाचनिक ग्रंथ

1. बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्न मालिका)
2. शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)
3. स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)
4. मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)